''आगे भी जारी''

मेरी एक प्रिय मित्र, हैलेन बाउर, हमारे स्थानीय चर्च बुलेटिन में, जुडसोनिया, आरकैन्सास की मण्डली का इतिहास लिख रही है। सप्ताहान्त वह अपने लेख को ''क्रमश:'' शब्द से समाप्त करती है जिससे हम समझ जाते हैं कि उसने अभी अपनी शृंखला पूरी नहीं की अर्थात इसके आगे और लेख भी होगा।

यदि लूका के दिनों में इस प्रकार का साहित्यिक अर्थात शृंखलाबद्ध ढंग प्रचलित होता, तो प्रेरितों 28:31 के शब्दों के बाद वह इसी शब्द को लिख सकता था, क्योंकि (जैसे कि हमारे पिछले पाठ में ज़ोर दिया गया था) प्रेरितों के काम की पुस्तक में केवल सुसमाचार प्रचार के *आरम्भ* का ही वर्णन किया गया है। वह कार्य परमेश्वर के लोगों की आने वाली हर पीढ़ी द्वारा ''आगे भी जारी'' था (और है)।

इस शृंखला को मैं ''रोमांचकारी मसीहियत: प्रेरितों के काम की पुस्तक पर अध्ययन'' का नाम देता हूं, परन्तु हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि लूका द्वारा लिखना बन्द करने से वह रोमांच समाप्त हो गया था। यह रोमांच बाद के दिनों में भी जारी रहा, और आज भी जारी रहना *चाहिए*।

हम में से जो लोग प्रेरितों के काम की पुस्तक में से पढ़ाते हैं, उनकी एक बड़ी चिन्ता है: हम डरते हैं कि प्रेरितों के काम के अध्ययन को बीसवीं शताब्दी में ''जाकर ऐसा ही करो'' की आज्ञा के स्थान पर पहली शताब्दी के इतिहास के रूप में देखा जाएगा। सुझाव है कि हमें ''*क्वीन मेरी* से सबक'' लेना चाहिए:

क्वीन मेरी पहले एक बहुत बड़ा यात्री समुद्री जहाज था। द्वितीय विश्वयुद्ध में, उसे सेना के जहाज़ के रूप में सेवा देने का मौका मिला था; जिससे उसे हर समय नाज़ी पनडुब्बियों के आक्रमण का भय रहता था। आज, उसे कैलिफोर्निया की लौंग बीच नामक बन्दरगाह पर रखा गया है। अन्य सामान के साथ-साथ उसका बड़ा सा इंजन भी निकाल लिया गया है। उसके डैक पर यादगारी दुकानें सजती हैं। बड़े-बड़े कमरों को सम्मेलनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है; इसके कैबिनों को होटल के कमरों की तरह किराये पर दिया जाता है। फिल्म अभिनेता इसके नाविक दल की भूमिकाएं निभाते हैं। इतना बड़ा समुद्री जहाज आज मात्र अजायब घर बनकर रह गया है।

प्रेरितों के काम के अध्ययन में, हमने प्रभु की कलीसिया के आरम्भ के बारे में पढ़ा था। इसका आरम्भ शानदार था, क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने सुसमाचार को पृथ्वी के चारों कोनों में जहां भी मनुष्य रहते थे, पहुंचाया! यदि हम सावधान नहीं होते, तो कलीसिया संसार में भलाई के लिए परमेश्वर की निरन्तर शक्ति होने के बजाय एक अजायबघर और अतीत का स्मारक बन सकती थी!

अपनी शृंखला के इस अन्तिम पाठ में मैं वहां से आगे बढ़ना चाहता हूं जहां पर लूका ने लिखना बन्द किया था। आंशिक रूप से (स्पष्ट बात करें), मैं अपनी इस जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए ऐसा कर रहा हूं कि पौलुस का क्या हुआ। परन्तु, लूका ने, हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट करना उचित नहीं समझा, और मेरा भी यह मुख्य उद्देश्य नहीं है कि आपकी जिज्ञासा को शांत करूं। मेरी सबसे बड़ी इच्छा है कि कलीसिया का प्रत्येक सदस्य पौलुस और अन्य विश्वासी मसीहियों द्वारा पूर्व में आरम्भ किए गए महान कार्य को *व्यक्तिगत तौर पर जारी रखने* के लिए प्रेरित हो!

पौलुस के चलते रहने वाले काम

प्रेरितों 28:31 के बाद पौलुस का क्या *हुआ?* ''कलीसिया के इतिहास के पितामह'' यूसबियुस ने लिखा, ''अभी-अभी पता चला है कि अपने उत्तर सफलतापूर्वक देकर पौलुस फिर से सुसमाचार का प्रचार करने के लिए निकल पड़ा, और उसके बाद दूसरी बार रोम में आया, और नीरो के राज्य में शहीद हो गया।''[1] हमारी जानकारी के अनुसार, यह तथ्य उस विचार से मेल खाता है कि पौलुस को रोम में *दो बार* कैद हुई थी और उसी दौरान उसने एक और यात्रा भी की थी:

पहला, हम ''जेल से लिखी पत्रियों''[2] और 2 तीमुथियुस में बहुत सी भिन्नताएं देख सकते हैं। जब पौलुस ने 2 तीमुथियुस लिखी, तब भी वह कैद में था (2 तीमुथियुस 1:8; 2:9), परन्तु आइए उन भिन्नताओं पर विचार करें जो उस अंक में और जेल में लिखी गई पत्रियों में पाई जाती हैं। बुनियादी तौर पर जेल की पत्रियों का सुर आनन्ददायक है, जबकि 2 तीमुथियुस का निराशाजनक। पौलुस ने जब जेल में पत्रियां लिखीं, तो उस समय वह मित्रों से घिरा हुआ था; परन्तु जब उसने 2 तीमुथियुस लिखी तो केवल लूका ही उसके साथ था बाकी सब उसे छोड़कर चले गए थे (2 तीमुथियुस 4:11)। जेल की पत्रियां लिखने के समय पौलुस को छूट जाने की उम्मीद थी (फिलिप्पियों 1:25, 26; 2:24; फिलेमोन 22);[3] जबकि 2 तीमुथियुस लिखने के समय मरने की (2 तीमुथियुस 4:6, 7)। ये और अन्य भिन्नताएं हमें आश्वस्त करती हैं कि पौलुस रोम में एक बार नहीं, बल्कि दो बार कैद हुआ था।

दूसरा, तीमुथियुस और तीतुस के नाम लिखी पत्रियों में वर्णित कुछ निश्चित घटनाओं और यात्राओं को प्रेरितों के काम के कालानुक्रम में कोई स्थान नहीं मिला है। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने इसके कई उदाहरण दिए हैं:

> इनमें उसका तीमुथियुस को कुछ निश्चित शिक्षकों के प्रभाव का सामना करने के लिए इफिसुस में छोड़कर जाना, जबकि वह मकिदुनिया में चला गया (1 तीमुथियुस 1:3); तीतुस को क्रेते में रह गई बातों को सुधारने के लिए छोड़ना (तीतुस 1:5); त्रुफिमुस को बीमार छोड़ उसका मिलेतुस में जाना (2 तीमुथियुस 4:20); और जाड़ा काटने के लिए निकुपुलिस में जाना शामिल है (तीतुस 3:12)।[4]

अन्ततः, पौलुस के पहली कैद से छूटने और उसकी अगली यात्राओं के बारे में बाइबल के बाहर के आरम्भिक लेखकों ने कई हवाले दिए थे। उदाहरण के लिए, क्लेमेन्ट ऑफ रोम (लगभग 96 ईस्वी) ने कहा कि पौलुस ने ''सारे जगत में धार्मिकता की शिक्षा दी'' और ''पश्चिम की अन्तिम सीमा तक'' पहुंच गया।[5] मुरेटोरियन कैनन (लगभग 170–190 ईस्वी) ने पौलुस की यात्रा की बात की जब वह ''[रोम] नगर से स्पेन को गया।''[6] इस प्रकार के हवाले आत्मा की प्रेरणा से नहीं हैं; लेकिन जब इन्हें पवित्र शास्त्र की गवाही की रोशनी में देखा जाता है, तो कुछ सीमा तक ये महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

उपलब्ध जानकारी से, हम प्रेरितों 28:31 के बाद की सम्भावित शृंखला की बिखरी कड़ियों को एकत्र कर सकते हैं। किसी समय (शायद प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्त के थोड़ी देर बाद), पौलुस अन्ततः नीरो के सामने अपना पक्ष रखने के लिए खड़ा था (प्रेरितों 27:24)।[7] फेलिक्स, फेस्तुस और अग्रिप्पा के सामने पौलुस के महान प्रवचनों ने सम्भवतः उसे अपना उत्तर देने का आधार दे दिया था। नीरो की प्रतिक्रिया के बारे में तो हम कुछ नहीं जानते, परन्तु एक बात तय है, कि उसे अपनी पापयुक्त जीवन शैली को छोड़ने और एक मसीही बनने का सुअवसर मिला था!

मुकदमे के दौरान राज्यपाल फेस्तुस और यूलियुस सेनापति की पूरक रिपोर्टों से पौलुस के पक्ष में दबाव बना होगा। स्पष्टतः, वह मुकदमे में निर्दोष ठहरा था और लगभग 62 ईस्वी में उसे छोड़ दिया गया था।

रोम में मसीह का प्रचार करने का पौलुस का बहुत पुराना सपना था (रोमियों 15:24, 28), इसलिए सम्भवतः उसके गन्तव्य स्थानों में से उसका यह प्रथम स्थान था।[8] निश्चय ही वह क्रेते में गया (तीतुस 1:5), जहां उसने तीतुस को छोड़ा; और मिलेतुस में गया (2 तीमुथियुस 4:20) जहां उसने बीमार त्रुफिमुस को छोड़ना था। मिलेतुस से वह अपने मित्र फिलेमोन को मिलने के लिए कुलुस्से के भीतरी भाग में गया होगा (फिलेमोन 22)। उसे लगा था, कि वह इफिसुस के प्राचीनों को दोबारा कभी नहीं देख पाएगा (प्रेरितों 20:25)। परमेश्वर द्वारा उसे उनसे मिलने का एक और अवसर प्रदान करने पर वह कितना आनन्दित हुआ होगा! (1 तीमुथियुस 1:3.) पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसुस में कलीसिया की सहायता के लिए छोड़ दिया, जबकि स्वयं वह मकिदुनिया की ओर चल दिया (1 तीमुथियुस 1:3)।

मकिदुनिया जाते हुए, पौलुस त्रोआस में रुका था। उसने वहां एक बागा अर्थात चोगा और चर्म पत्रों को सम्भवतः वापस आकर ले जाने के इरादे से एक मित्र के पास रख दिया था (2 तीमुथियुस 4:13)। जब यह प्रेरित मकिदुनिया पहुंचा, तो उसने निश्चय ही उन लोगों के साथ उतना ही समय बिताया जितना उसने फिलिप्पी में उससे प्रेम करने वालों के साथ बिताया (फिलिप्पियों 2:23, 24)। मकिदुनिया से जाते हुए, उसने तीमुथियुस को पहली पत्री और तीतुस के नाम पत्री लिखी होगी।[9] पौलुस, जो लगभग 70 वर्ष का हो चुका था, अपने बाद उस कार्य को जारी रखने के लिए एक जवान को तैयार कर रहा था।[10] पौलुस कुरिन्थुस में भी गया होगा (2 तीमुथियुस 4:20), परन्तु उसका अन्तिम गन्तव्य

स्थान निकुपुलिस था जो पश्चिमी यूनान में एक रोमी कॉलोनी थी, जहां उसने जाड़ा काटने की योजना बनाई थी (तीतुस 3:12)।

यात्रा के दौरान पौलुस द्वारा प्रचार करते समय रोम में अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाएं घट रही थीं, जो अन्ततः उसकी पुनः गिरफ्तारी तथा मृत्यु का कारण बनीं। 18 जुलाई, 64 ईस्वी के दिन, राजधानी नगर में आग लगी:

> नगर के निचले भाग से आरम्भ होकर, आग तेज़ी से ज़ोर मारती हुई नौ दिन तक हाहाकार मचाती और सिस्कारती रही। चौदह भागों में से जिनमें नगर को बांटा गया था, दस झुलसकर वास्तव में नष्ट हो गए थे। महल, मन्दिर तथा वेदियां सब राख बन चुके थे। यहां तक कि 2,00,000 लोगों के बैठ सकने की क्षमता वाला मैक्सिमस सर्कस भी नष्ट हो गया था।[11]

अत्याधुनिक इतिहासकार नगर के जलने के लिए नीरो को दोषी न मानते हुए कहते हैं कि आग अकस्मात लग गई होगी। परन्तु, रोम के क्रुद्ध लोग जो इस राजधानी को नये सिरे से बनाने और नीरो की महत्वाकांक्षी योजनाओं के विवेकहीन कार्यों के बारे में जानते थे, सम्राट पर दोष लगा रहे थे। अपने को लोगों के कोप से बचाने के लिए नीरो ने कलीसिया को बलि का बकरा बनाया। एक रोमी इतिहासकार, टेसिटुस (55–120 ईस्वी) ने, नीरो के कामों के बारे में लिखा:

> इस अफवाह से निजात पाने के लिए, नीरो ने अपना अपराध ... उन लोगों पर लगा दिया जिनसे आम लोग घृणा करते ... और उन्हें मसीही कहते थे। ... उन्हें कुत्तों के भोजन के लिए जंगली जानवरों की खालें पहनाकर, क्रूसों पर या आग से मार डालना। ... जब दिन का प्रकाश जाता रहता तो अन्धेरे में प्रकाश करने के लिए उन्हें जलाया जाता। नीरो ने उस तमाशे के लिए अपने बाग खुले छोड़ दिए थे और उसने इसे सर्कस बना दिया था ...।[12]

टेसिटुस ने यह भी लिखा है कि नीरो ने मसीही लोगों के सिर काटकर, उन्हें ऊंचे खम्भों से शेरों के आगे फेंकवाया था।

इस प्रकार विश्वासियों का दर्दनाक सताव आरम्भ हुआ। विश्वास का प्रचार करने वालों की सबसे अगली पंक्ति में खड़े, पौलुस को सताव का पहला निशाना बनाया गया होगा। उसे सम्भवतः 67 ईस्वी के लगभग, निकुपुलिस से (तीतुस 3:12) पकड़कर रोम ले जाया गया। इस कारावास के दौरान पौलुस पहले की तरह ''अपने भाड़े के घर में'' (प्रेरितों 28:30) नहीं रहा। आरम्भिक लेखक हमें बताते हैं कि उसे मैमरटाइन जेल में बन्दी बनाकर रखा गया था, जिसकी छत में हवा और प्रकाश अन्दर आने के लिए एक पत्थर में एक गन्दा छोटा सा गड्ढा था।

उस मंद प्रकाश में, किसी अज्ञात परोपकारी द्वारा भेजे गए कलम और चर्मपत्र का इस्तेमाल करके, पौलुस ने अपने प्रिय तीमुथियुस को अन्तिम शब्द लिखे। रोमी नागरिक होने के कारण, इस प्रेरित को न्यायालय में दिन बिताने की अनुमति मिल गई थी, परन्तु अब उसे अपने समर्थकों से अलग कर दिया गया था और शत्रुओं द्वारा उस पर झूठे आरोप लगाए गए थे, इसलिए पौलुस को दूसरी बार रिहा होने की कम ही उम्मीद थी (2 तीमुथियुस 4:16)।[13] पौलुस ने इस विश्वास से कि मृत्यु तो सन्निकट है (4:6-8), जवान प्रचारक से आग्रह किया:

> मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर। ... मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है। ... जो बागा मैं त्रोआस के करपुस के यहां छोड़ आया हूं, जब तू आए, तो उसे और पुस्तकें, विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना (2 तीमुथियुस 4:9-13)।
>
> जाड़े से पहिले चले आने का प्रयत्न कर: ... (2 तीमुथियुस 4:21क)।

सर्दी के मौसम में, यात्रा पर जाना असम्भव था और पौलुस को अगले बसन्त तक जीवित रहने की उम्मीद नहीं थी।

बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार,[14] पौलुस का 67/68 ईस्वी में रोम में सिर काट दिया गया था। जल्लाद द्वारा उसका सिर काटने के बाद अन्ततः इस बुज़ुर्ग प्रेरित की आत्मा अपने प्रभु से मिलने के लिए स्वतन्त्र थी (फिलिप्पियों 1:23)। उसे अलविदा कहते हुए,[15] सदा तक रहने वाले उसके शब्द हमारे मनों में आते हैं:

> क्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन देगा; और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं (2 तीमुथियुस 4:6-8)।

पहली शताब्दी में अन्य मसीहियों के चलते रहने वाले काम

प्रेरितों के काम की पुस्तक के दूसरे भाग में, लूका ने मुख्यतः पौलुस का काम दर्ज किया है। इसका अर्थ यह नहीं था कि कहीं दूसरी जगहों पर रहने वाले मसीही कुछ करते ही नहीं थे। पतरस और दूसरे प्रेरितों ने यीशु के बारे में बताते हुए अपनी यात्रा जारी रखी (प्रेरितों 9:32)। बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार, प्रेरित सुसमाचार को लेकर अधिकतर सभ्य जगत में गए थे। यह उनको मिली आज्ञा (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 1:8) और कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की बात से मेल खाता था

कि ''... सुसमाचार ... जो तुम्हारे पास पहुंचा है और जैसा *जगत में भी* फल लाता, और बढ़ता जाता है; ... तुम में भी ऐसा ही करता है'' (कुलुस्सियों 1:5, 6)।[16]

प्रारम्भिक मसीही लेखकों ने कहा कि प्रेरित यूहन्ना ने अपने अधिकतर वर्ष इफिसुस में बिताए। हम निश्चित तौर पर जानते हैं कि पतरस ने अन्ताकिया (गलतियों 2:11) और बाबुल (1 पतरस 5:13) तक दूर-दूर की यात्रा की थी।[17] दूसरे लोग भी, जो प्रेरित नहीं थे, शुभ समाचार को फैलाने में लगे हुए थे (प्रेरितों 11:19)। अपुल्लोस जैसे प्रचारक सक्रिय रहे (1 कुरिन्थियों 16:12; तीतुस 3:13)। कम से कम एक यात्रा में, पतरस ने अपने साथ पौलुस के दो पूर्व सहयात्रियों सिलवनास तथा मरकुस को साथ लिया था (1 पतरस 5:12,13)।

पवित्र आत्मा की अगुआई प्राप्त पौलुस जैसे लोगों ने, विश्वास जगाने और मसीही लोगों को दृढ़ करने के लिए अपने वचनों को क्रमानुसार लिख दिया था। लूका ने सुसमाचार का वृत्तांत तथा प्रेरितों के काम की पुस्तकें 60 ई. के आरम्भ में लिखीं थीं। लगभग उसी समय मत्ती और मरकुस ने मसीह के जीवन के अपने वृत्तांत लिखे थे।[18] आत्मा की प्रेरणा प्राप्त कलीसिया के अगुवे पौलुस की तरह मसीही लोगों तथा मण्डलियों के नाम पत्रियां लिख रहे थे। यीशु के सौतेले भाई याकूब ने व्यावहारिक मसीहियत पर यहूदी मसीहियों के नाम एक पुस्तक लिखी। यीशु के एक और सौतेले भाई ने जिसका नाम यहूदा था, मसीही लोगों से एक संक्षिप्त पत्र लिखकर आग्रह किया कि ''... उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो ...'' (यहूदा 3)। अपनी मृत्यु से थोड़ी देर पहले (2 पतरस 1:13-15), पतरस ने दो पत्रियां लिखीं: पहली पत्री सम्मान से सताव सहने के विषय में, और दूसरी मसीही लोगों को झूठी शिक्षा के बारे में चेतावनी है।[19] वे चार पत्रियां अर्थात याकूब, 1 और 2 पतरस और यहूदा, सम्भवत: 60 ईस्वी में लिखी गई थीं।[20]

पहली शताब्दी के अन्त में, प्रेरित यूहन्ना ने उन विशेष समस्याओं के समाधान के लिए जो उस समय उठी थीं, पांच पुस्तकें लिखीं। सुसमाचार के उसके वृत्तांत ने इस गलत शिक्षा को अनावृत्त किया कि यीशु ''शरीर में'' नहीं आया था (यूहन्ना 1:1, 14; देखिए 2 यूहन्ना 7)। मसीही लोगों के नाम उसके पहले पत्र में उस गलती के व्यावहारिक परिणामों का सामना करने के लिए बताया गया (1 यूहन्ना 1:1; 2:1)। उसके दूसरे और तीसरे पत्र निजी तौर पर भेजे गए नोट्स थे; अन्य चिन्ताओं में, उनमें गलत शिक्षा देने वालों के विरुद्ध उत्साहित करने की चेतावनी थी (2 यूहन्ना 7-11)। यूहन्ना ने नये नियम की अन्तिम पुस्तक भी लिखी, परन्तु इस पुस्तक के लिए वह मुख्यत: प्रभु का सचिव था (प्रकाशितवाक्य 1:1, 9-11)। वह अन्तिम पुस्तक, अर्थात प्रकाशितवाक्य, उन मसीही लोगों को उत्साहित करने के लिए थी जो सताव सह रहे थे (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

आरम्भ से ही, कलीसिया को सताया जाता रहा है। पौलुस के अलावा बहुत से लोग अपने विश्वास की खातिर पहली शताब्दी में मारे गए। शुरुआती दशकों में, कलीसिया को मुख्यत: यहूदियों ने सताया था। अपने अध्ययन में हम देख चुके हैं कि यहूदी सभा ने स्तिफनुस को पथराव करके मार डाला; मसीही पुरुषों तथा महिलाओं को शाऊल द्वारा

कलीसिया को सताए जाने के समय मौत के घाट उतारा गया; और राजा हेरोदेस ने प्रेरित याकूब का सिर कटवा दिया था (प्रेरितों 7:58-60; 22:4; 26:10; 12:2)। बाइबल से बाहरी परम्परा के अनुसार, यहूदियों के हाथों मरने वाला एक और व्यक्ति याकूब था, जो यीशु का सौतेला भाई था:

> अन्ततः, [यरूशलेम में] उसने धनियों, यहूदियों के भ्रष्ट अगुओं के क्रोध को भोरा। उन्होंने यह बहाना बनाकर कि वह व्यवस्था भंग कर रहा था, उसे मन्दिर [की छत] से [नीचे] फेंक दिया। उस पर पथराव किया, और फिर एक सोटे से उसकी जीवन लीला समाप्त कर दी। कहा जाता है कि वह अपने होंठों पर अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना लिए मर गया।[21]

बाद में, 64/65 ई. में नीरो द्वारा शुरू किए गए कलीसिया के सताव को रोमी सरकार ने और बढ़ावा दिया था।[22] दुर्व्यवहार के बारे में पतरस के पत्र नीरो के सताव के दौरान ही लिखे गए हो सकते हैं। बाइबल से बाहरी परम्परा के अनुसार, बहुत से प्रेरितों और दूसरे लोगों की मृत्यु जिसका अध्ययन हमने प्रेरितों के काम में किया था उसी हिंसक दौर में हुई थी। पतरस की मृत्यु की सबसे मंद बात यह है कि उसे क्रूस पर कोड़ों से मारा गया था। कहानी के अनुसार, पतरस ने यह सोचकर कि वह अपने प्रभु की मौत मरने के योग्य नहीं है, अपने आपको सिर के बल लटकाने के लिए कहा था।

पहले पहल, मसीही लोगों पर मसीही होने का आरोप नहीं लगाया जाता था बल्कि उन पर कुछ विशेष आपराधिक आरोप लगाए जाते थे। आग लगाने के मुख्य आरोप के अलावा, उन पर राजद्रोह, जादूगरी, आपस में शारीरिक सम्बन्ध रखने और यहां तक कि आदमखोर होने के भी आरोप लगाए गए थे।[23] मसीहियत के प्रति समाज की घृणा, दूसरे धर्म तथा उनके देवताओं को मसीही लोगों द्वारा न सहना था। यीशु के अनुयायियों पर, ''नास्तिक'' और ''मानवता से घृणा करने वाले'' होने का ठप्पा लगा दिया गया। जल्दी ही आने वाली हर प्रकार की विपत्ति का आरोप मसीही लोगों पर लगने लगा, चाहे वह विपत्ति प्राकृतिक होती या मानवनिर्मित। उन्हें दोषी ठहराने के लिए किसी प्रमाण की जरूरत नहीं थी:

> [नीरो के सताव के] प्रारम्भ में, एक पेशी की आवश्यकता होती थी, परन्तु [लगाए गए बहुत से आरोपों के] परिणामस्वरूप मसीही लोगों की पेशी को ''ऐसे लोगों के रूप में जिनकी शिक्षा को odium generis humani [अर्थात मानवता के शत्रु]'' के रूप में प्रसिद्धि मिली थी मुकदमे की आवश्यकता न रही क्योंकि यह धर्म ही अपराध करने वाला बन गया ...।[24]

रोमी सरकार द्वारा दूसरा सामान्य सताव सम्राट डोमिशियन के समय हुआ:[25]

> डोमिशियन (लगभग 81-96) ऐसा शासक है जो इतिहास में इतना गिर गया है जिसने साम्राज्य को मसीहियों के लहू से नहलाया। उसका यह सताव सम्राट की पूजा करने के लिए बाध्य करने के उद्देश्य के लिए था। ...
>
> डोमिशियन के शासन में मसीहियत को राजकीय शक्ति के साथ जीवन तथा मृत्यु के संघर्ष में प्रवेश करना पड़ा। ... दण्ड कई प्रकार से दिया जाता था। कइयों को मार दिया जाता था, कइयों को देश निकाला दिया जाता था, कइयों को यह कहने को मजबूर किया जाता था कि राजा देवता है। कइयों को इनमें से मिला जुला दण्ड दिया जाता था।[26]

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सम्भवत: डोमिशियन के राज्य के अन्तिम दिनों में लिखी गई थी (94-96)। अध्याय 2 मसीही लोगों से ''प्राण देने तक विश्वासी'' बने रहने का आग्रह करता है (आयत 10) और ''मेरे विश्वासयोग्य साक्षी [मूलत: शहीद] अन्तिपास'' के बारे में बात करता है जो पिरगमुम में मारा गया था (आयत 13)। अध्याय 6 ''परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी'' मारे जाने वाले और लोगों की बात करता है (आयत 9)। अध्याय 17 ''बड़ा बाबुल'' नामक एक वेश्या को दिखाता है, जो ''पवित्र लोगों के लहू और यीशु के गवाहों [मूलत: शहीदों] के लहू पीने से मतवाली'' हो गई थी (आयतें 1-6)। (वह वेश्या ''सात पहाड़ों'' पर बैठी है [आयत 9], इसलिए उसे रोम की नगरी के रूप में पहचानना कठिन नहीं होगा जो सात पहाड़ियों पर बनाई गई थी।)

परम्परा के अनुसार, डोमिशियन के सताव के दौरान मारे जाने वालों में से एक पौलुस का मित्र और साथी तीमुथियुस था।[27] इस सताव में, एकमात्र प्रेरित यूहन्ना ही बचा था जिसे पतमुस नामक टापू पर देश-निकाला दे दिया गया था, जहां उसे ''यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य'' मिला (प्रकाशितवाक्य 1:1, 9)।[28]

क्या रोम का अत्याचार कलीसिया की आत्मा का नाश कर पाया? क्या परमेश्वर के लोगों के ''काम'' बन्द हो गए? दूसरी शताब्दी के तरतुलियन नामक एक मसीही लेखक ने रोमी सरकार के सताव के परिणाम का वर्णन इस प्रकार किया है:

> हम कल के लोग हैं, फिर भी हम तुम से सम्बन्धित हर जगह, नगरों, टापुओं, किलों, कस्बों, सभाओं यहां तक कि तुम्हारे ही डेरे, तुम्हारे कबीलों, महल, अदालत तक पहुंच गए हैं ... इनके द्वारा प्राप्त की गई कोई भी बात उस अत्याचार से अधिक नहीं है जिसकी खोज तुमने की, इसके विपरीत यह हमारे स्कूल के लिए लोगों को जीतती है। जितना तुम हमें काटते हो उतने ही हम बढ़ते हैं। मसीही लोगों [अर्थात शहीदों] का लहू तो बीज है।

वर्षों से मसीहियों के चलते रहने वाले काम

दूसरी और तीसरी सदी के दौरान, मसीही शहीदों के लहू का ''बीज'' रोमी साम्राज्य में हर जगह उदारता से बोया गया था। प्रसिद्ध पुस्तक *Foxe's Book of Martyrs* में, जॉन फोक्स ने, रोमी सम्राटों के शासन में दस साधारण सतावों की सूची दी है।[29] सम्राट तराजन के शासन में, यूहन्ना के एक चेले, इग्नेशियस[30] को रोम में लाकर एक अखाड़े में जंगली जानवरों के भोजन के लिए फेंक दिया गया था। मरकुस औरिलयुस के शासन में, यूहन्ना के ही एक चेले, बुज़ुर्ग पोलीकार्प[31] को रोम में लाया गया था। मृत्यु दण्ड देने से पहले उसे मसीह को बुरा-भला कहने का आदेश दिया गया था। उसने उत्तर दिया, ''छियासी वर्षों तक मैंने उसकी सेवा की है और उसने मुझे कोई घाव नहीं दिया: फिर मैं अपने राजा और उद्धारकर्त्ता की निन्दा कैसे करूं?''[32] लगभग उसी समय, जस्टिन मार्टिन[33] की यीशु पर विश्वास के कारण हत्या कर दी गई थी। सिवरुस के शासन में, एक और प्रसिद्ध अगुवे, लियोन्स के इरेनियुस का सिर काट दिया गया था। जॉन फोक्स द्वारा बताए गए अन्य सताव मेक्सिमस, डिसियस, वेलरियन और मैक्सिमियन के शासनकाल में हुए थे।

इच्छा तो थी कि समय और स्थान मुझे उन मसीहियों के बारे में बताने की अनुमति देता जिन्होंने कलीसिया के अस्तित्व की शुरुआती सदियों में दुख सहा अर्थात अफ्रीका में एक जवान माता परपेटुआ की दिल दहला देने वाली कहानी, जिसकी मृत्यु अखाड़े में हुई; थेबान लिज़न की कहानी जिसमें 6,666 मसीही सिपाहियों को गाऊल में मसीहियत को समाप्त करने के लिए दूसरी सेना की तलवारों से टुकड़े-टुकड़े करके काट दिया गया था। सम्राट की सहायता करने से इन्कार करने वाले प्रथम बर्तानवी शहीद, अलबान की कहानी, जिसका सिर उसके पहले जल्लाद के साथ ही दिया गया था, जो अलबान और दूसरे बहुत से लोगों के साहस को देखकर मसीही बन गया था।

फिर से, मैं पूछता हूं: क्या ऐसा व्यवहार कलीसिया का नाश कर पाया? क्या परमेश्वर के लोगों के ''काम'' समाप्त हो गए? एक लेखक ने यह टिप्पणी की:

> कलीसिया का जन्म सताव के बीच हुआ और पहले तीन सौ वर्षों तक इसकी निराश छाया से यह कभी नहीं बची। परन्तु, इसके बावजूद, और शायद इसी के कारण कलीसिया पर सताव बढ़ता रहा। सताव की आग ने कलीसिया को उनसे मुक्त कर दिया जिसकी वचनबद्धता केवल गुनगुनी थी, इस प्रकार कलीसिया रहने के लिए आसान जगह बनने से बच गई।[34]

आरम्भिक मसीहियों के व्यवहार की ज़ोरदार गवाही रोम की कब्रों के तहखानों में मिल सकती है। कब्रों के तहखाने रोम के नगर के नीचे मीलों तक बनी भूमिगत सुरंगों

और कमरों की भूल-भुलैया हैं। मसीही लोगों ने जिन तहखानों में अपने मुर्दों को गाड़ा था, वहां वे आराधना के लिए इकट्ठे होते थे और कभी-कभी बचने के लिए वहां पनाह भी लेते थे। सुरंगों की दीवारें जहां पर मृतकों को गाड़ा जाता था, चित्रों तथा शिलालेखों से ढकी हुई हैं। सुरंगों में से होकर जाएं, तो आपको आरम्भिक मसीहियों द्वारा कबूतर, लंगर, मुकुट और विश्वास के अन्य चिह्नों के चित्र बने हुए मिल जाएंगे। वहां यीशु को अच्छे चरवाहे के रूप में चित्रित किया गया है। आपको जो बात वहां नहीं मिलेगी वह है प्रताड़ना या अपने सताने वालों के विरुद्ध क्रोध के चित्र न दिखाई देना। वहां ''शोक का कोई चित्र नहीं है, बदले की भावना का चित्र नहीं है; सब में भद्रता, परोपकार एवं प्रेम सांस लेता है।''[35]

रोमी शासनकाल में मसीही लोगों पर सबसे बड़ा अत्याचार डियोक्लिशियन के शासन में हुआ था। 303 ईस्वी में डियोक्लिशियन और उसके एक सहयोगी गलेरियुस ने, चर्च के भवनों को नष्ट करने, कलीसिया के अगुओं को कैद करने, सभी मसीहियों को बलिदान देने के लिए मजबूर करने और मसीही शास्त्रों को जब्त करने के आदेश जारी किए थे। एक जवान डीकन तीमुथियुस, और तीन सप्ताह पूर्व उसकी नवविवाहिता पत्नी माउरा को एक दूसरे के पास क्रूस पर लटकाया गया था क्योंकि उन्होंने बाइबल की एक प्रति को जलाने से इन्कार कर दिया था।

डियोक्लिशियन और गलेरियुस ने अपने उग्र ढंगों के लिए बहुत देर तक प्रतीक्षा की, क्योंकि तब तक कलीसिया इतनी बढ़ चुकी थी कि उसे पहचान की आवश्यकता नहीं थी। 311 ईस्वी में, गलेरियुस ने सताव बन्द कर दिया था। 313 ईस्वी में, कॉन्सटेन्टाइन और लिसनियुस के ''एडिक्ट ऑफ मिलान'' से मसीहियत को पूर्ण वैधानिक दर्जा मिल गया। 323 ईस्वी में, जब कॉन्सटेन्टाइन महान शासक बना, तो उसने रोमी साम्राज्य द्वारा कलीसिया पर अत्याचार बन्द करवा दिया।[36] जैसे किसी ने कहा है, ''रोम ने मसीहियत के साथ तलवार से भेंट की और मसीहियत रोम के साथ प्रेम से मिली-और प्रेम विजयी हुआ।''

वैधानिक पहचान की प्राप्ति मिली-जुली प्राप्ति में बदल गई, क्योंकि कॉन्सटेन्टाइन के प्रभाव ने आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लेखकों द्वारा की गई धर्मत्याग की भविष्यवाणी को पूरा करने की गति बढ़ा दी थी।[37] परन्तु, उस स्वधर्म त्याग की खोज करना या उन शिक्षा सम्बन्धी गलतियों में रहना जो कलीसिया के संदर्भ में उठीं, इस पाठ का कार्यक्षेत्र नहीं है। बल्कि, मैं केवल इतना ही ज़ोर देना चाहता हूं (1) कि कलीसिया चाहे कितनी भी भ्रष्ट हो गई थी, परन्तु ''कुछ लोग विश्वासी'' बने रहे (2) वे विश्वासी परमेश्वर के लिए ''काम'' करते रहे। एक इतिहासकार ने यह अवलोकन किया:

> मसीहियत का फैलाव पवित्र संक्रमण के एक ढंग की तरह हुआ। इसके मार्ग को व्यापार की मुख्य रेखाओं के साथ-साथ अंकित किया जा सकता है। ... किसी नगर में एक बार लगने के बाद, यह आस-पास के जिले में फैल गई और इसकी

नई जड़ें फूट निकलीं। बितुनिया-पोन्तुस राज्य के उत्तरी सी बोर्ड की बात करते हुए, प्लिनी ''काफ़ी संख्या'' बताता है। ''क्योंकि'' वह कहता है, ''इस अंधविश्वासीपन का संकम्रण न केवल नगरों में, बल्कि गांवों तथा देश में भी फैल चुका है।'' जिस कारण मंदिर वीरान हो गए, धार्मिक रीतियों को मानना बन्द कर दिया गया, पीड़ितों (बलिदान दिए जाने वाले जानवर) को खरीदा नहीं जाता ...।

पूर्व में, लगभग 200 ई. में फरात के आगे, अन्ताकिया के उत्तर पूर्व में, यूनानी भाषी एक छोटे से राज्य की राजधानी, एडेस्सा में एक मसीही राजा था ... । सिकंदरिया से सुसमाचार मिसर और फिर आगे कुरेने से होता हुआ फैला। पश्चिम में ही, अफ्रीका के राज्य जिसकी राजधानी करथेज थी, के साथ दक्षिणी गाऊल जिसका केन्द्र लिओन्स था, के दो बड़े क्षेत्र भी जोड़े गए थे। ... स्पेनी मसीहियों के बारे में हमें [दूसरी] सदी के अन्त में सुनने को मिलता है; जहां तक ब्रिटेन जैसे दूर-दूर के इलाकों की बात है, ... हम कुछ रोमी ... मसीहियों का अनुमान लगाते हैं।[38]

बाद की सदियों में कुछ मिशनरियों के नाम चिरस्मरणीय हो गए हैं। यकीनन ही, बहुत से विश्वासी मसीही जिन्होंने वर्षों तक वचन को फैलाया और अपने विश्वास के लिए कष्ट सहे, उन्हें मनुष्यों की पुस्तकों में जगह नहीं मिल पाई है। लेकिन, परमेश्वर जानता था कि वे कौन थे, और उसने अपने लोगों के ''काम'' का लेखा-जोखा रखना जारी रखा।

आज परमेश्वर के लोगों के चल रहे काम

यदि स्थान होता, तो मैं बहुत से देशों में होने वाले सुधार तथा पुन: बहाली की लहर के बारे में लिख सकता था। कलीसिया को अपनी शुद्धता एवं परमेश्वर के प्रति ईमानदार रहने के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ा था। फिर, मैं आपको उन विश्वासी मसीहियों के बारे में बता सकता था जिन्हें मैं आधी सदी से अधिक समय से कलीसिया में देख रहा हूं, अर्थात सारे संसार में प्रभु और उसके वचन के प्रति समर्पित पुरुषों तथा स्त्रियों को।[39] ये शब्द लिखते समय भी उनके चेहरे और नाम मेरी आंखों के सामने आ रहे हैं। परन्तु, मुझे स्वयं को यह ज़ोर देकर संतुष्ट करना चाहिए कि प्रभु कलीसियाओं में लगातार चलता रहता है (प्रकाशितवाक्य 1:13, 20; 2:1), अर्थात वह अपने सभी बच्चों के बारे में आज भी ''जानता है'' (प्रकाशितवाक्य 2:2, 9, 13, 19; आदि), और आज भी वह उनके ''कामों'' को लिखता जा रहा है।

ट्रुथ फ़ॉर टुडे जिन देशों में पहुंचता है वहां आज अति रोमांचक ''कार्य'' हो रहे हैं। नाइजीरिया, और अन्य अफ्रीकी देशों में, भारत और दूसरे बहुत से देशों में आत्माओं की फसल कटने पर हमें प्रसन्नता होती है। परमेश्वर के सिंहासन के पास इकट्ठे इन ''अध्यायों'' को पढ़ने पर कितना आनन्द मिलेगा! मैं उस समय की प्रतीक्षा कर रहा हूं जब *आपका* अध्याय स्वर्गीय किताबों में पढ़ा जाएगा!

मैं हैरान होता हूं कि परमेश्वर ने पूर्वी यूरोप के लिए भी द्वार खोल रखे हैं। मेरी पत्नी और मैं एक महीना पहले ही रोमानिया से लौटे हैं, जहां मेरी बेटी सिंडी और उसका परिवार रहता है। मेरा भाई, कोये एक महीने तक शिक्षा देने के लिए कल ही पोलैंड गया है। मेरे कुछ अच्छे मित्र, केथ और टैमी एवरी और उनके बच्चे, बिलारस को चले गए हैं। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के सम्पादक एडी क्लोर अपनी पत्नी सूसन तथा बच्चों के साथ एक सौ अन्य मसीहियों को लेकर यूक्रेन में गत कई ग्रीष्म कालों में सुसमाचार सुना रहे हैं। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता हूं कि बीसवीं शताब्दी के मसीहियों के ''कामों'' को लिखने के लिए कागज के कितने पन्ने लग सकते हैं।

बीसवीं शताब्दी की बात करते हुए, किसी ने कहा है कि ''परमेश्वर ने 'प्रेरितों के काम' की लगभग 20 पुस्तकें पूरी कर ली हैं और 21वीं पुस्तक लिखना आरम्भ कर दिया है।'' यदि प्रभु इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में नहीं लौटता है, तो इस शताब्दी की चुनौती भी वही होगी जो पहली शताब्दी में थी अर्थात ''सारे जगत में जाकर सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार'' करने, ''सब जातियों के लोगों को चेला'' बनाने, ''और पृथ्वी की छोर तक'' वचन पहुंचाने की चुनौती (मरकुस 16:15; मत्ती 28:19; प्रेरितों 1:8)। परमेश्वर हमारी सहायता करे ताकि हम इक्कीसवीं शताब्दी में उस चुनौती को पूरा कर सकें जैसे पहली शताब्दी में पौलुस और अन्य मसीहियों ने उसे पूरा किया था! आइए परमेश्वर को कुछ ऐसा रोमांचकारी काम करके दें जो लिखा जा सके![40]

प्रवचन नोट्स

बहुत से प्रचारकों तथा शिक्षकों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक के अगले भाग के रूप में जिसे ''अध्याय 29'' कहा जाता है, प्रस्तुत किया है। वे इस शीर्षक का इस्तेमाल यह ज़ोर डालने के लिए करते हैं कि प्रेरितों के काम का अध्याय 28 परमेश्वर के दासों के ''काम'' की कहानी का अन्त नहीं था। आपको उस शीर्षक का इस्तेमाल करना अच्छा लग सकता है!

पाद टिप्पणियां

[1]यूसबियुस एक्लेस्टिएस्टिकल हिस्टरी 2.22. [2]इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों तथा फिलेमोन को ''प्रिज़न एपिस्टल्ज़'' अर्थात जेल की पत्रियां कहा जाता था। पिछले पाठ में इन पर नोट्स देखिए। [3]जैसा कि पिछले पाठ में ध्यान दिलाया गया था, प्रभु चाहता तो पौलुस मरने को तैयार था, परन्तु उसे छूट जाने की उम्मीद थी। [4]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ़ अपोस्टल्ज़, vol. 2. [5]1 क्लेमेन्ट 5. क्लेमेन्ट ऑफ रोम (लगभग 30-100) प्रेरिताई के पिताओं में सबसे महत्वपूर्ण है। [6]मुरेटोरियन कैनन एक प्रारम्भिक हस्तलिपि का खण्ड है अर्थात नये नियम की पुस्तकों की एक सूची है जो नये नियम के भाग की रचना के लिए मूल्यवान प्रमाण उपलब्ध कराता है। [7]नीरो ''कैसर की दुहाई'' के प्रत्येक मामले में व्यक्तिगत तौर

पर मुकदमे की सुनवाई नहीं करता था, इसलिए पौलुस के उसके सामने खड़ा होने की बात पर कई लोग संदेह करते हैं। कई लोगों ने तो यहां तक सुझाव दिया है कि पौलुस को बिना किसी मुकदमे के छोड़ दिया गया था क्योंकि यरूशलेम के यहूदियों ने अपने आरोपों पर ज़ोर नहीं दिया। लेकिन, स्वर्गदूत ने कहा था कि पौलुस को ''कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है,'' सो मुझे विश्वास है कि वह कैसर के सामने खड़ा हुआ। [8]पृष्ठ 42 पर मानचित्र देखिए। [9]कई लोगों का मानना है कि पौलुस के इफिसुस में रहते हुए, तीतुस के नाम पत्र पहले ही लिखा गया था। [10]पहला और दूसरा तीमुथियुस तथा तीतुस को कभी-कभी ''द पास्टरल एपिस्टल्ज़'' कहा जाता है क्योंकि साम्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रचारकों को आम तौर पर ''पास्टर'' कहकर पुकारा जाता है। परन्तु, जैसा कि हम देख चुके हैं, बाइबल में ''पास्टर'' शब्द प्रचारक के लिए नहीं, बल्कि प्राचीनों के लिए प्रयुक्त होता है (''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 174 पर प्रेरितों 20:28 पर नोट्स देखिए)। 1 व 2 तीमुथियुस और तीतुस को ''द इवैंजलिस्टिक एपिस्टल्ज़'' अर्थात सुसमाचारीय पत्रियां कहना अधिक उचित होगा।

[11]पॉल रोजर्स, ''ऐट द एंड ऑफ पॉल'ज़ लाइफ'' *द प्रीचर'ज़ पीरियोडिकल* (मई 1985)। [12]वेरा ई. वाकर *ए फर्स्ट चर्च हिस्टरी* में उद्धृत। [13]पौलुस द्वारा उल्लेखित ''पहले उत्तर'' के सम्बन्ध में यह व्यापक विवाद है, परन्तु सम्भवत: यह किसी हाल ही की घटना की बात है शायद वास्तविक मुकदमे से पहले तैयारी की सुनवाई की बात है। [14]पवित्र शास्त्र में इस पाठ में चर्चा की जाने वाली घटनाओं की जानकारी शामिल नहीं है। इसलिए इन घटनाओं के बारे में तथ्यों तथा प्रारम्भिक विश्वासों को जानने के लिए मैंने बाइबल के बाहर के प्रारम्भिक मसीही लोगों तथा सांसारिक इतिहासकारों के लेखों से देखा। निस्संदेह, ये ''परम्पराएं'' परमेश्वर के आत्मिक वचन की तरह भरोसेमंद नहीं हैं। [15]हमारी जुदाई केवल तब तक ही है जब तक हम दोबारा स्वर्ग में नहीं मिल जाते। [16]यह इस बात से भी मेल खाएगा कि प्रेरितों के काम के पिछले भाग में अधिकांश प्रेरित यरूशलेम में नहीं रहे थे (''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 132 पर प्रेरितों 9:26, 27 पर नोट्स; ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 36 से प्रेरितों 12:17 पर नोट्स; ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 129 पर प्रेरितों 15:4, 6 पर नोट्स; ''प्रेरितों के काम, भाग-5'' में प्रेरितों 21:18 पर नोट्स देखिए)। [17]कई लोगों का मानना है कि ''बाबुल'' गुप्त रूप से रोम को ही कहा गया था, परन्तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखे जाने तक बाबुल को रोम कहने का कोई प्रमाण नहीं है (प्रकाशितवाक्य 17:5, 9, 10)। न ही कोई ऐसा संकेत है कि 1 पतरस 5:13 की भाषा सांकेतिक थी। बाबुल पहली शताब्दी में फरात नदी पर एक छोटा सा नगर था और पतरस सम्भवत: अपना पहला पत्र लिखने के समय वहीं था। कुछ हद तक हम कह सकते हैं कि पौलुस के रोमियों के नाम पत्र लिखने के समय पतरस रोम में नहीं था, वरना पौलुस अवश्य उसका उल्लेख करता। एक परम्परा के अनुसार पतरस अपने अन्तिम दिनों में रोम चला गया और वहीं उसकी मृत्यु हुई। शायद ऐसा ही हुआ। [18]इस तथा अगले भाग में दिए गए लेखों की और जानकारी के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के अंग्रेज़ी संस्करण (जुलाई 1993) के अंक में ''ए सर्वे ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट'' देखिए। [19]अपने दूसरे पत्र में, पतरस ने पौलुस के लेखों का हवाला दिया (2 पतरस 3:15, 16)। [20]याकूब की पुस्तक 44-62 ईस्वी के बीच किसी भी समय की लिखी हो सकती है।

[21]डेविड रोपर, ''जेम्स: प्रैक्टिकल क्रिश्चियेनिटी'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अंग्रेज़ी संस्करण, जुलाई 1993)। [22]यहूदी भी अवसर मिलने पर मसीहियों को सताने में लगे रहे (प्रकाशितवाक्य 2:9, 10); परन्तु 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश के बाद वे उस प्रयास में लगे रहने में अक्षम थे। [23]ऐसे अधिकतर आरोप लोगों द्वारा मसीही शिक्षा तथा जीवन को न समझने के कारण लगे: राज्य की शिक्षा को राजद्रोह मान लिया गया; आत्मिक दानों को देने की बात को जादूगरी कहा जाने लगा; दूसरे मसीहियों से प्रेम करना निकट सम्बन्धियों के बीच सम्भोग समझा जाने लगा; प्रभु भोज और प्रभु की देह में सांकेतिक रूप से भाग लेने को आदमखोरी का नाम दिया गया। [24]एस. ऐंगस ''रोमन एम्पायर'' *इन्टरनेशनल स्टैन्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया* ed. जेम्स ऑर। [25]डोमिशियन वेस्पेसियन का छोटा बेटा था। उसके बड़े भाई तीतुस ने जो सम्राट भी था, 70 ईस्वी में यरूशलेम का विनाश किया। [26]रे समर्स, *वर्दी इज़ द लैम्ब।* [27]एक परम्परा के अनुसार, पौलुस का

दूसरा घनिष्ठ मित्र डॉक्टर लूका, नीरो के सताव के कारण पहले ही कत्ल हो चुका था।[28]परम्परा के अनुसार डोमिशियन की मृत्यु के बाद, यूहन्ना इफिसुस में लौट गया जहां लगभग एक सौ वर्ष का होने पर उसकी स्वाभाविक मृत्यु हुई।[29]मेरी गैन्टर्ट किंग, ed., *फोक्स 'ज़ बुक ऑफ मारटिर्स*।[30]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 159 पर पाद टिप्पणी 10 में इग्नेशियस का उल्लेख है।

[31]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 159 पर पाद टिप्पणी 10 में पोलीकार्प का उल्लेख है।[32]पोलीकार्प *मारटिर्डम ऑफ पोलीकार्प 9।*[33]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 153 और 154 पर जस्टिन मार्टिन का उल्लेख है।[34]*हैन्डबुक ऑफ चर्च हिस्टरी,* द लिविंग वर्ड सीरीज़।[35]अज्ञात लेखक, थियोडोरा डब्ल्यू. विल्सन, *इन टू द ऐरिना* में उद्धृत।[36]इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोगों के विरुद्ध हर प्रकार का सताव बन्द हो गया था। परमेश्वर के मार्ग पर खड़े होने वालों को हमेशा किसी न किसी प्रकार सताव सहना पड़ा है और हमेशा सहना पड़ेगा (2 तीमुथियुस 3:12)।[37]देखिए मत्ती 24:24; प्रेरितों 20:28-31; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-12; 1 तीमुथियुस 4:1-3; 2 तीमुथियुस 4:1-4; 2 पतरस 2:1, 2.[38]जे. वरनॉन बार्टलेट, *अरली चर्च हिस्टरी* (द रिलिजियस ट्रैक्ट सोसायटी, 1894), 19-20.[39]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है, तो स्थानीय कलीसिया के उन ''साधारण मसीहियों'' का उद्धहरण देना उपयुक्त होगा जिन्होंने प्रेरितों के काम वाले मसीहियों के आत्मा को दिखाया।[40]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाए, तो सुनने वालों को सुसमाचार को ग्रहण करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए। ध्यान देने योग्य यह है कि उनका वचन को मानना (या न मानना) भी स्वर्गीय किताबों में लिखा जाएगा।

पौलुस की अन्तिम यात्राएं व मृत्यु

प्रेरितों के काम के अन्त में, लूका पौलुस को जेल में छोड़ आया, परन्तु नये नियम की तीन पुस्तकों में पौलुस की आगे की गतिविधियों की झलक मिलती है। 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस, पुस्तकें कलीसिया के दो जवान अगुओं के नाम लिखी गई थीं जिन्होंने पौलुस के साथ काम किया था और उससे शिक्षा पाई थी।

हम जानते हैं कि पौलुस चाहता था कि सम्भव हो तो वह स्पेन जाए (रोमियों 15:24, 28), और कलीसिया के इतिहासकार यूसिबियुस (लगभग 275-339 ईस्वी) ने संकेत दिया कि पौलुस किसी समय अपने रोमी कारावास से छूट गया था। इसके अलावा, आरम्भिक मसीही साहित्य में ऐसे कथन हैं कि पौलुस स्पेन तक सुसमाचार लेकर गया। लगभग 96ई. में रोम के क्लेमैन्ट ने कुरिन्थियों को लिखा:

> ... सात बार दासता में फेंके जाने, देश छोड़कर जाने को बाधित होने और पथराव के बाद पौलुस को धीरज से सहने का पुरस्कार मिला। पूर्व और पश्चिम दोनों जगह प्रचार करने के बाद, उसने अपने विश्वास के कारण, सारे जगत में धार्मिकता की शिक्षा देने के कारण प्रसिद्धि पाई और पश्चिम के अन्तिम छोर तक आने पर पूर्णतावादियों के अधीन शहीदी पाई। इस प्रकार उसे इस जगत से उठा लिया गया और वह अपने आपको धीरज का प्रभावशाली उदाहरण प्रमाणित करते हुए, पवित्र स्थान में चला गया।[1]

तीतुस को लिखने के समय, पौलुस रोमी बेड़ियों से स्वतन्त्र था। वह अभी-अभी तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़कर आया था (1 तीमुथियुस 1:3), और लगता है कि उसने तीतुस को क्रेते में कुछ समय बिताने के बाद वहां छोड़ दिया था (तीतुस 1:5)। वह क्रेते से दलमतिया को जाने वाले मार्ग में निकोपुलिस नामक नगर में तीतुस से दोबारा मिलना चाहता था, जहां पर उसने सर्दियां बिताने की इच्छा की थी (तीतुस 3:12)। हम जानते हैं कि तीतुस बाद में दलमतिया में गया (2 तीमुथियुस 4:10), लेकिन इस बारे में हमें पक्की जानकारी नहीं है कि तीतुस की यात्रा जारी रखने से पहले बनाई गई योजना के अनुसार पौलुस और तीतुस मिले थे या नहीं।

2 तीमुथियुस लिखने के समय, पौलुस फिर से रोम में कैद था और पहले ही उस पर एक मुकदमा चल रहा था (2 तीमुथियुस 4:16, 17)। सम्भवत: उसे लम्बे समय के लिए कैद में नहीं रखा गया, क्योंकि प्रमाण से पता चलता है कि उसने अभी-अभी यात्रा की थी। वह त्रोआस में अपना बागा और कुछ चर्मपत्र छोड़ आया था (2 तीमुथियुस 4:13) और उसे मिलेतुस और कुरिन्थुस में अपने मित्रों को छोड़े अधिक देर नहीं हुई थी (2 तीमुथियुस 4:20)। वह इफिसुस में भी गया होगा (2 तीमुथियुस 4:14, 15) और वहां भी उसे कठिनाई का सामना ही करना पड़ा होगा। दूसरा तीमुथियुस स्पष्टतया पौलुस का अन्तिम पत्र था। इसके शब्द, जो पौलुस की अन्तिम वसीयत और इच्छा पत्र का काम करते हैं, मर्मस्पर्शी अपीलों तथा, आरोपों और विजय के नोट्स से गुथे हुए हैं, चाहे सामने मौत ही क्यों न हो।[2]

पौलुस की पुन: गिरफ्तारी सम्भवत: 67 ई. में हुई। बाइबल से बाहरी परम्परा के अनुसार रोम में उस साल नीरो के आदेश से उसका सिर काट दिया गया था।

~~पाद टिप्पणियां~~—

[1]कलेमेन्ट 5. [2]द ज़ॉन्डरवन पिक्टोरियल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ द बाइबल, ed. मेरिल सी. टैनी में आर. एन. लॉन्गनैकर, ''पॉल, द अपोस्टलज।''

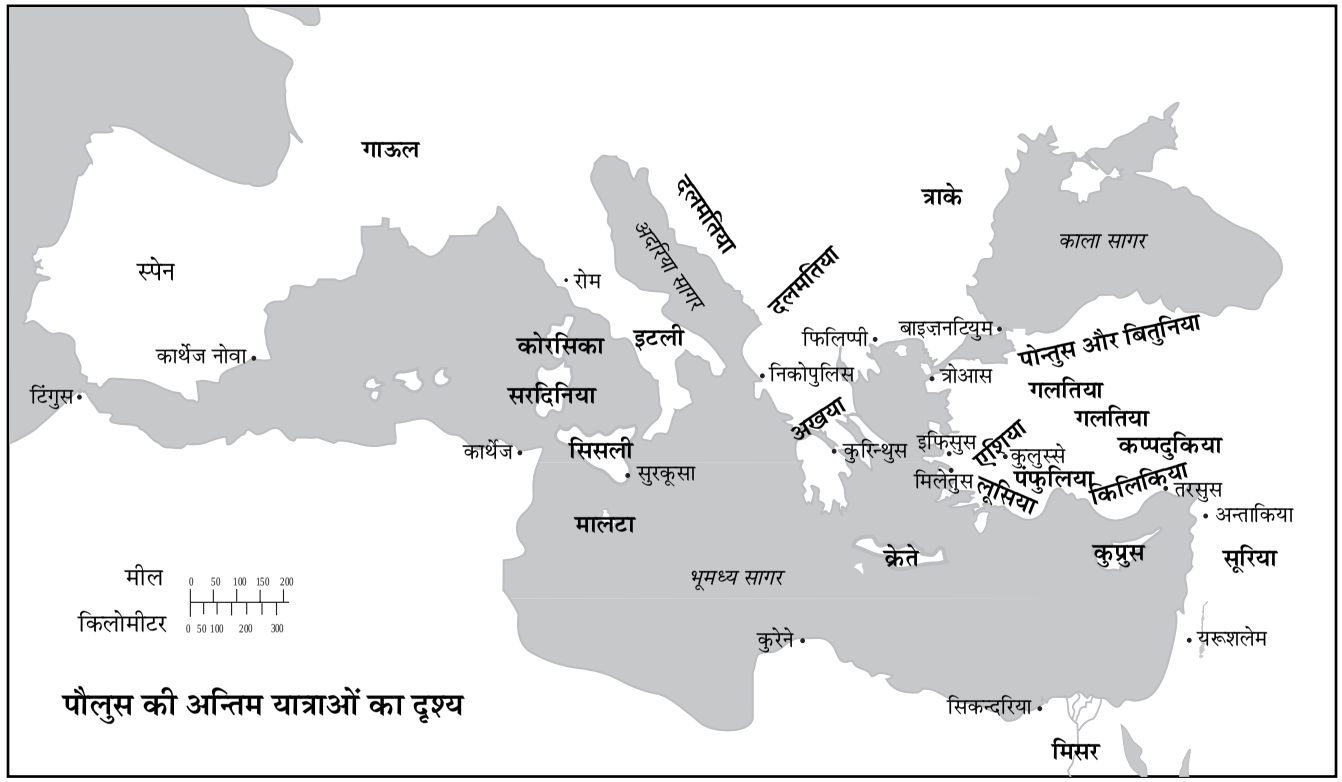

पौलुस की अन्तिम यात्राओं का दृश्य